17 जून 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
# पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 6 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जून (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2543) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

# 51वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अतिशय सफलतापूर्वक संपन्न

**● देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुये 2000 से अधिक एवं सैंकड़ों स्थानीय आत्मार्थी ज्ञानयज्ञ में लाभान्वित ●प्रात: 5 से रात्रि 10 बजे तक विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से 16 घण्टे अविरल ज्ञानगंगा प्रवाहित ● शिविर में लगभग 45 विद्वानों द्वारा धर्मप्रभावना।**

**खनियांधाना-शिवपुरी (म.प्र.) :** प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री की जन्मभूमि में उनके तन-मन-धन के सहयोग तथा अथक् परिश्रम से निर्मित विश्व की अद्वितीय रचना श्री नंदीश्वर दिगम्बर जैन मन्दिर में रविवार, दिनांक 21 मई से बुधवार, दिनांक 7 जून तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित एवं श्री नेमिनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर ट्रस्ट व अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, खनियांधाना द्वारा आयोजित 18 दिवसीय 51वाँ वीतराग-विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अतिशय सफलतापूर्वक सानन्द संपन्न हुआ।

**शिविर के मुख्य आमंत्रणकर्त्ता श्री महेन्द्रकुमार-राहुल-विनीत-धार्मिक जैन गंगवाल परिवार, जयपुर थे।** श्री समयसार विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री मुकेश-बबीता जैन व चि. आकाश-अतिशय जैन (स्व. श्री विनोद जैन सर्राफ परिवार) जैना ज्वैलर्स ग्वालियर, प्रवचनसार विधान के आमंत्रणकर्त्ता पण्डित शिखरचंद जैन, डॉ. संजय जैन, राजीव, आलोक, सूर्यकीर्ति जैन, अलंकार परिवार विदिशा एवं नियमसार विधान के आमंत्रणकर्त्ता श्री वीरेन्द्रकुमार-सुनीता जैन, महेन्द्रकुमार-सरिता जैन, चि. गौरव-अपूर्वा जैन, शुद्धात्म, चेतन जैन कोठादार परिवार (खनियांधानावाले) इन्दौर थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित संजयजी मंगलायतन, ब्र. महेन्द्रजी शास्त्री अमायन, सुनीलजी, अनिलजी, दीपकजी धवल भोपाल, मुकेशजी जैन कोठादार, दिव्यांश जैन द्वारा संपन्न हुये।

**प्रात:कालीन प्रवचन -** प्रतिदिन **आध्यात्मिकसत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी** के छहढाला की चौथी ढाल पर सी.डी.प्रवचन के अतिरिक्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा तीनों विधानों की जयमाला पर ग्रन्थाधिराज समयसार, प्रवचनसार व नियमसार का सार बताते हुए मार्मिक एवं सरल शब्दों में प्रवचन हुये।

**रात्रिकालीन प्रवचन -** ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा 47 नयों पर प्रतिदिन हुये प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अनिलजी गुना, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, ब्र. अमित भैया विदिशा, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली आदि विद्वानों द्वारा विभिन्न विषयों पर मार्मिक प्रवचन हुये। प्रवचनों के उपरान्त अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

**(शेष पृष्ठ 8 पर ...)**

# 52वाँ प्रशिक्षण शिविर सिद्धायतन-द्रोणगिरि में

## बुन्देलखण्ड के उपस्थित मुमुक्षु समाज के साथ द्रोणगिरी ट्रस्टीगणों ने संभाला प्रशिक्षण शिविर ध्वज

**खनियांधाना-शिवपुरी (म.प्र.) :** यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर सिद्धायतन-द्रोणगिरी द्वारा आगामी 52वें प्रशिक्षण शिविर का आमंत्रण हर्षोल्लासपूर्वक दिया गया। सिद्धायतन-द्रोणगिरी के ट्रस्टीगण मंदिर की पूजन सामग्री से भरे थाल लेकर गाजते-बाजते मंच पर आये और डॉ. भारिल्ल को श्रीफल भेंटकर सम्मानित किया तथा 52वाँ प्रशिक्षण शिविर द्रोणगिरी में लगाने हेतु आमंत्रण दिया। जिसे स्वीकार करते हुये डॉ. भारिल्ल ने 52वें प्रशिक्षण शिविर के लिये विशेष ध्वज द्रोणगिरी के प्रतिनिधि मण्डल को सौंप दिया।

कार्यक्रम में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, श्री चन्द्रभानजी जैन (अध्यक्ष-सिद्धायतन-द्रोणगिरी), श्री मुन्नालालजी जैन शाहगढ (मंत्री-सिद्धायतन-द्रोणगिरी), श्री विनोदजी डेवडिया शाहगढ, डॉ. गुलाबजी शाहगढ, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर आदि महानुभाव उपस्थित थे।

सम्पादकीय –

## संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

संजू को इसप्रकार का कोई शौक भी नहीं था। उसकी आवश्यकता तो केवल उसके पिता के कारण उत्पन्न हुई प्रतिकूलता का गम भुलाने के लिये शराब और समय बिताने एवं मनोरंजन के लिए नृत्य–नौटंकी देखना, संगीत सुनना तथा यदा–कदा रमी आदि खेलने तक ही सीमित थी; पर लोग तो उसे आवारा और सुनीता के प्रेम में पागल समझ ही बैठे थे। लोगों का समझना भी निराधार नहीं था। एक तो परस्थितियाँ ही कुछ ऐसी बनी थीं, दूसरे – यह जरूरी भी तो नहीं है कि ज्ञेयों के अनुसार ही ज्ञान हो। जैसी वस्तु हो उसका वैसा ही ज्ञान हो – यह कोई नियम नहीं है। कभी–कभी बालों में मच्छरों के होने का भ्रम भी तो हो जाता है।

यद्यपि सरला और सुनीता महासती सीता की भाँति पूर्ण पवित्र थी, उनका दामन सदा बेदाग रहा। जिसतरह रावण के यहाँ रहने से निर्दोष सीता को भी दोषी मान लिया गया था, यही परिस्थिति संजू के साथ घटी हॉस्टल की घटना से सरला व सुनीता के साथ बन गई थी।

घरों से निष्कासित और प्रताड़ित संजू और राजू को जब कहीं कोई अवलम्बन नहीं दिखा तो वे अपने पुराने मित्र और सहपाठी अन्नू और अज्जू के घर पहुँच गये थे।

उन्हें मालूम था कि उन दोनों ने पढाई छोड़ दी है तथा उनकी शादियाँ भी उन्हीं संगीत और नृत्य में निपुण सुनीता और सरला से हो गई है। पहले तो वे उनसे मिलने को कतराते भी रहे; क्यों संजू को रह–रहकर हॉस्टल की घटना याद आ जाया करती थी; पर अब तो उन्होंने मन पर पत्थर रखकर हिम्मत कर ही ली।

उन्होंने सोचा – ''चलो चलकर अपनी भूल की क्षमायाचना भी कर लेंगे और पूज्या भाभियों से मिलकर उन्हें वैवाहिक जीवन की बधाई भी दे देंगे।''

उन्हें क्या पता था कि हमारा उनसे मिलना उनके लिये अभिषाप भी बन सकता है। यद्यपि उनके मन में कोई पाप नहीं था, पर पापियों का भाव तो प्रगट हुए बिना नहीं रहता। जो जैसे होते हैं, वे सारी दुनिया को सदैव अपने चश्मे से ही देखते हैं।

दुनिया का भी क्या दोष ? 'दूध कलारिन हाथ लखि मद समुझे सब ताहि' मदिरा बेचने वाली कलारिन के साथ में भले आज दूध हो, पर दुनिया तो उस दूध को भी मदिरा ही समझती है न ? उसे क्या पता कि अब उसकी मटकी में मदिरा नहीं, दूध है।

यद्यपि सुनीता के कौमार्य काल में संजू का झुकाव सुनीता की ओर था। वह उसके रूप–लावण्य और नृत्य–संगीत की कला पर समर्पित था। कॉलेज के समय जब वह वार्षिकोत्सव में संगीत व नृत्य के अतिसुन्दर आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत करती थी तो पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज जाता था।

पर वह उसी कॉलेज के एक साधारण क्लर्क की कन्या थी, अत: उसके पिता को जहाँ एक ओर अपनी बेटी की सफलता पर गर्व था, वहीं वह सदा सशंकित भी बना रहता था कि कहीं कोई उसकी बेटी की ओर आकर्षित होकर मेरे लिये सिरदर्द न बन जाये।

जब से हॉस्टल की घटना उसके कानों में पड़ी, तब से वह और भी अधिक चौकन्ना हो गया था। अब तो वह जल्दी से जल्दी अपनी बेटी के पीले हाथ करने की चिन्ता में हो गया था।

अज्जू उसी के मित्र का लड़का था। मित्र की मृत्यु एक ट्रेन दुर्घटना में हो गई थी। जाना–पहचाना होने से और देखने–दिखाने में आकर्षक व्यक्तित्व होने से अज्जू सुनीता के पिता को पसन्द था तथा अच्छा खिलाड़ी होने के कारण सुनीता का भी उसके प्रति सहज आकर्षण था। अत: सुनीता की मर्जी से ही उसके पिता द्वारा सुनीता का विवाह अज्जू के साथ कर दिया गया।

अज्जू का मन पढने में कम और खेलों में अधिक होने से वह अधिक नहीं पढ सका था। और धंधे में नुकसान हो जाने से अब केवल मेहनत–मजदूरी ही उसके हाथ में रह गई थी।

अन्नू भी इसी रुचि का था। उसके भाग्य ने पूरी तरह साथ नहीं दिया। वह ग्रेजुएट होकर भी बेकारी का शिकार बना रहा। थर्डक्लास जो था। आजकल थर्ड क्लास पास होना तो फेल हो जाने से भी बदतर हो गया है। यह जानते हुए भी अन्नू अपनी पढाई के प्रति गंभीर नहीं हुआ। जब नौकरी के लिए दर–दर भटकना पड़ा तब कहीं उसे अपनी गलती महसूस हुई। पर जब समय ही बीत गया तो फिर पीछे पछताने से भी क्या होने वाला था।

(क्रमश:)

# विभिन्न स्थानों पर ग्रुप एवं बाल संस्कार शिविर संपन्न

**(1) अजमेर (राज.) :** यहाँ श्री वीतराग विज्ञान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, पुरानी मण्डी के तत्त्वावधान में 27वाँ ग्रीष्मकालीन आध्यात्मिक बाल, युवा व प्रौढ चेतना शिविर दिनांक 21 से 28 मई तक श्री ऋषभायतन अध्यात्मधाम, वैशाली नगर में प्रात: एवं सीमंधर जिनालय में सायंकाल संपन्न हुआ। इस अवसर पर पण्डित कमलचंदजी जबेरा, पण्डित मनीषजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अश्विनजी नानावटी एवं श्री पीयूषजी जैन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 90 बच्चों सहित अनेक साधर्मियों ने लाभ लिया।

**(2) बीना (म.प्र.) :** यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर चैतन्यधाम में दिनांक 1 से 8 जून तक पंचम बाल शिक्षण शिविर संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री राघौगढ, पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगामा, पण्डित अपूर्वजी शास्त्री इटावा, पण्डित राहुलजी शास्त्री बण्डा एवं विदुषी शुचिता जैन द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर में लगभग 285 बच्चों ने लाभ लिया।

**(3) नागपुर (महा.) :** यहाँ श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 20वाँ सामूहिक शिक्षण शिविर दिनांक 28 मई से 4 जून तक संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित प्रसन्नजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। बाल कक्षा हेतु पण्डित सौरभजी शास्त्री, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, आभासजी जैन, कु.अनुभूति जैन व कु. सिद्धि जैन तथा आमंत्रित 35 शास्त्री विद्वानों द्वारा तत्त्वज्ञान की गंगा बही।

शिविर का संयोजन पण्डित सुदर्शनजी शास्त्री, पण्डित भूषणजी शास्त्री, पण्डित विनीतजी शास्त्री, पण्डित रवीन्द्रजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री ने एवं निर्देशन पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री, पण्डित विपिनजी शास्त्री व पण्डित श्रुतेशजी शास्त्री ने किया।

**(4)** अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, शाखा बण्डा, कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन एवं कुन्दकुन्द पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में बुंदेलखण्ड के छोटे-बड़े 35 स्थानों पर दिनांक 14 से 21 मई तक जैनत्व बाल संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। इस ग्रुप शिविर का उद्घाटन श्री महावीर जिनालय सागर (म.प्र.) में हुआ, जिसमें पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल द्वारा प्रवचन हुआ।

शिविर में लगभग 55 शास्त्री विद्वानों द्वारा विभिन्न स्थानों पर जैनत्व के संस्कार प्रदान किये गये। शिविर के संयोजन का कार्य रितेशजी इन्दौर, राहुलजी शास्त्री बण्डा, संजयजी सिद्धार्थी इन्दौर, मयंकजी शास्त्री बण्डा, सम्मेदजी जैन इन्दौर के साथ अनेक सहयोगियों द्वारा किया गया।

**(5) इन्दौर (म.प्र.) :** यहाँ साधना नगर स्थित जिनालय में श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट के तत्त्वावधान में 17वाँ जैनत्व बाल संस्कार शिक्षण शिविर दिनांक 5 से 11 मई तक आयोजित किया गया।

इस अवसर पर पण्डित श्रेणिकजी जबलपुर द्वारा दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित अशोकजी शास्त्री राघौगढ एवं पण्डित सौरभजी-गौरवजी शास्त्री के साथ-साथ टोडरमल महाविद्यालय जयपुर, अकलंक महाविद्यालय बांसवाड़ा, धरसेन महाविद्यालय कोटा एवं आत्मार्थी विद्यालय दिल्ली के विद्वानों द्वारा कक्षाओं का लाभ मिला। शिविर के अंतिम 3 दिन डॉ.उत्तमचंदजी सिवनी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविर में लगभग 800 बच्चों ने जैनत्व के संस्कार ग्रहण किये।

# मुक्त विद्यापीठ के छात्रों हेतु सूचना

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) के **प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून 2017 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है।** परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व (लगभग 25 जून तक) सभी परीक्षार्थियों को एनरोलमेंट नम्बर व प्रश्नपत्र भेज दिए जावेंगे। जिन परीक्षार्थियों ने अभी भी परीक्षा की तैयारी शुरु नहीं की है, वे शीघ्र तैयारी में जुट जावें।

परीक्षा कार्यक्रम निम्नानुसार है -

## परीक्षा कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम

### द्विवर्षीय विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

**प्रथम वर्ष (उपाध्याय कनिष्ठ)**

| | |
|---|---|
| **1. प्रथम प्रश्नपत्र** | **:** वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग-1 |
| **2. द्वितीय प्रश्नपत्र** | **:** छहढाला (70 अंक) + सत्य की खोज (30 अंक) |

**द्वितीय वर्ष (उपाध्याय वरिष्ठ)**

| | |
|---|---|
| **1. प्रथम प्रश्नपत्र** | **:** तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 |
| **2. द्वितीय प्रश्नपत्र** | **:** लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका |

### त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा (प्रथम सेमेस्टर)

**प्रथम वर्ष -**

| | |
|---|---|
| **1. प्रथम प्रश्नपत्र** | **:** गुणस्थान विवेचन |
| **2. द्वितीय प्रश्नपत्र** | **:** क्रमबद्धपर्याय (70 अंक) + सामान्य श्रावकाचार (30 अंक) |

**द्वितीय वर्ष -**

| | |
|---|---|
| **1. प्रथम प्रश्नपत्र** | **:** समयसार-पूर्वरंग और जीवाजीवाधिकार |
| **2. द्वितीय प्रश्नपत्र** | **:** गोम्मटसार कर्मकाण्ड -प्रथम अध्याय |

**तृतीय वर्ष -**

| | |
|---|---|
| **1. प्रथम प्रश्नपत्र** | **:** समयसार-कर्ताकर्माधिकार |
| **2. द्वितीय प्रश्नपत्र** | **:** गोम्मटसार जीवकाण्ड - गाथा 70 से 215 तक (97 से 112 गाथा छोड़कर) |

**ध्यान रहे -** परीक्षा बोर्ड कार्यालय से जानकारी चाहने हेतु परीक्षार्थी अपना एनरोलमेंट नम्बर, नाम, स्थान एवं विषय का उल्लेख अवश्य करें; ताकि आपके द्वारा चाही गई जानकारी शीघ्र मिल सके। **- प्रबंधक**

### क्या हम सही मार्ग पर हैं ?

# सत्य क्या है ? (2)

## जो सभी एक दूसरे से भिन्न व परस्पर विरुद्ध हैं, वे सभी तो सच हो नहीं सकते हैं न !

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

आखिर हम करें क्या ?

अब तक तो हम जिस कुल में जन्मे उसे ही सच मानकर चलते रहे, हमारे सामने न तो कोई प्रश्न ही पैदा हुआ और न ही हमें इस विषय में कुछ भी करने की आवश्यकता ही महसूस हुई। आज यदि हम अपने कुलधर्म पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं तो हम यकायक अपने सुरक्षित घर से निकलकर एक चौराहे पर आ खड़े होते हैं, जहाँ से हमें मालूम ही नहीं कि किधर जाना है और क्या करना है ?

**प्रश्नचिह्न की शुरुआत कहाँ से हो और सच्चाई और अच्छाई का आधार क्या बने ?** आपके मन में एक द्विविधा खड़ी हो सकती है कि इस तरह तो हम अन्य सभी काम छोड़कर इसी काम में लग जायेंगे, हमें पूरा दार्शनिक बन जाना होगा ! फिर हमें इन बातों का कोई अनुभव तो है नहीं, हम यह सब करेंगे कैसे ?

आपकी द्विविधा सही है, पर यह तो हमें अपने जीवन में कई बार करना पड़ता है और हम करते भी हैं, हालांकि हमें सभी काम करने का अनुभव नहीं होता है और हम वे सभी कार्य जीवन में पहली बार ही करते हैं। अपने सभी अन्य काम रोककर भी करते हैं। यथा–स्वयं अपने लिये और फिर कालान्तर में अपने बच्चों के लिये वर–वधु खोजने का काम ऐसा ही तो है।

यदि हमें हृदयरोग हो गया हो और तत्काल ऑपरेशन करवाने की जरूरत हो तो हम क्या करते हैं ? कब करवाना है, कहाँ, किस डॉक्टर से व किस विधि से करवाना है ? उसके परिणाम क्या होंगे, आगामी जीवन कैसा होगा, ऑपरेशन में कितना खर्च होगा और उसका इंतजाम कहाँ से होगा ? आदि अनेक सवाल खड़े होते हैं। हालांकि हमारे ही नगर में अनेक डॉक्टर यह काम करते हैं, हम उन्हें जानते भी हैं, तब भी बिना सोचे–समझे ही उनसे यह काम नहीं करवा लेते हैं। हम स्वयं सारी दुनिया में उपलब्ध विकल्पों की तलाश करते हैं और फिर उपयुक्त निर्णय लेते हैं।

मैं आपसे पूछता हूँ कि कौनसा डॉक्टर अच्छा है और कौनसी विधि उपयुक्त है इस बात की जाँच करने की आपके पास क्या योग्यता है, क्या अनुभव है, क्या आपने पहले कभी यह काम किया है ? तब क्यों अपने अन्य सारे काम छोड़कर स्वयं ही इस काम में लग जाते हैं ?

क्योंकि इसमें हमारा जीवन दाव पर लगा है, एक गलती का दुष्परिणाम जीवनभर भुगतना पड़ेगा, अन्य किसी की राय पर इसलिये भरोसा नहीं किया जा सकता है कि उनका कोई निहित स्वार्थ या पूर्वाग्रह हो सकता है, जिसके कारण वे सही सलाह न दे पाएं या फिर वे इस कार्य के प्रति उतने गंभीर ही न हों और साथी के तौर पर विचार करके ही सलाह दे दें। चूंकि हमारे स्वयं के लिये यह जीवन–मरण का प्रश्न है इसलिये यह कार्य हम स्वयं ही करते हैं। यह करने की विधि भी विकसित करते हैं, प्रक्रिया भी तय करते हैं आदि।

तब आप ऐसा तो नहीं कहते हैं कि इसी डॉक्टर से ऑपरेशन करवा लेते हैं, हालांकि इसके कई ऑपरेशन फेल तो हो जाते हैं पर ये अपने से तो अच्छा ही है न ! अपने को तो एक चीरा लगाना भी नहीं आता है।

अरे ! तू अपने से उनकी क्या तुलना करता है ? तू तो डॉक्टर है ही कहाँ, जो वह तुझसे अच्छा है ?

तू सामान्य व्यापारी है और वह लोगों की छाती चीरने का लाइसेंस लेकर बैठा है। एक बेईमान व्यापारी के पास आकर कोई एक बार ठगा जायेगा पर यदि किसी अनाड़ी डॉक्टर के हाथ अपने आपको सौंप दिया तो अपने जीवन से हाथ धो बैठेगा।

एक गलत डॉक्टर के हाथ पड़ गया तो सिर्फ एक जीवन बर्बाद होगा पर एक गलत धर्म या धर्मगुरु के हत्थे चढ गया तो जन्म–जन्मान्तरों तक संसार में भटकता रहेगा।

मान लीजिये कि अंतत: हम यह तय करते हैं कि हम अमेरिका जाकर अपना यह ऑपरेशन करवायेंगे। तब कोई कहे कि जयपुर के सारे डॉक्टर अयोग्य हैं क्या ? इतने लोग उनसे ऑपरेशन करवाते हैं, वे सब मूर्ख हैं क्या, एक आप ही अकेले होशियार हो क्या ? जब इतने बड़े–बड़े पढे–लिखे लोग, इतने बड़े अधिकारी, इतने धन्नासेठ, इतने बड़े–बड़े नेता भी इन्हीं से अपना ऑपरेशन करवाते हैं, तब आप ही क्या अजूबे हो, यदि सभी लोग अमेरिका जाने लगेंगे तो देश के डॉक्टरों का क्या होगा, क्या ये भूखों नहीं मर जायेंगे और आपके पास क्या योग्यता है कि आप इतने सारे क्वालिफाईड डॉक्टरों को रिजेक्ट करके अमेरिका जा रहे हो ? आदि।

अरे भाई ! मैं अपने स्वास्थ्य के लिये व अपनी जीवन रक्षा के लिये अपना ऑपरेशन करवाने के लिये निकला हूँ, न कि किसी को सर्टिफिकेट बांटने या उसको रोजगार देने के लिये। वे सभी क्या हैं, कैसे हैं ? इसकी विवेचना करना मेरा उद्देश्य नहीं है, न ही मैं देश का प्रधानमंत्री हूँ जो किसी के बेराजगार होने की चिंता में अपनी रातों की नींद हराम करे। मेरा सरोकार तो मात्र इतना है कि मेरा ऑपरेशन सफलतापूर्वक हो जाये और मैं एक स्वस्थ जीवन जी सकूँ। मुझे मात्र एक डॉक्टर की जरूरत है। चूंकि मामला मेरे जीवन–मरण से संबंधित है तो इसके लिये मैं एक सबसे सक्षम और सबसे योग्य डॉक्टर की खोज में हूँ, बस।

क्या दुनियादारी के सभी मामलों में हमारा यही दृष्टिकोण और रुख नहीं होता है ? क्या हम सभी ऐसा ही नहीं करते हैं ? तक धर्म के मामले में ही क्यों हम अपनी आँखें मूंद लेते हैं, एक अंधे और मूर्ख ही तरह व्यवहार करना चाहते हैं ?

जैसा कि मैंने ऊपर कहा है कि **एक गलत डॉक्टर का चुनाव सिर्फ हमारे एक जीवन को खतरे में डालता है पर एक गलत धर्म और गुरु का चुनाव हमारे अनन्तकाल को खतरे में डाल देगा, हमें इस अनंत संसार में अनंतकाल तक भटकाता रहेगा।**

आवश्यकता इस बात की है कि हम इस मामले में सजग और संवेदनशील बनें, विचारपूर्वक धर्म की आराधना करें और अपने इस जीवन में अपने भव के अभाव की ठोस आधारशिला रखें। यदि हम इतना कर पाये तो हमारा यह जीवन सफल होगा। **(क्रमश:)**

# प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न

**खनियांधाना–शिवपुरी (म.प्र.) :** यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 6 जून को रात्रि में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की अध्यक्षता में प्रशिक्षणार्थी सम्मेलन संपन्न हुआ। इसके अतिरिक्त ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि महानुभावों के साथ सभी प्रशिक्षक अध्यापकगण भी मंच पर उपस्थित थे। अनेक प्रशिक्षणार्थियों ने अपने विचार रखे। सभी ने प्रशिक्षण विधि की प्रशंसा करते हुये अपने नगर में पाठशाला संचालन का संकल्प व्यक्त किया।

अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने संतोष व्यक्त करते हुए प्रशिक्षणार्थियों को कहा कि अभी जिन साधर्मियों ने आत्मविश्वासपूर्वक अपने भाव व्यक्त किये हैं, वैसे ही कार्य करें।

कार्यक्रम का मंगलाचरण सौम्य जैन खनियांधाना ने एवं संचालन पण्डित निखलेशजी शास्त्री के निर्देशन में कु. आकांक्षा जैन खनियांधाना एवं आयुष जैन हटा ने किया।

# दीक्षांत व समापन समारोह संपन्न

**खनियांधाना–शिवपुरी (म.प्र.) :** यहाँ प्रशिक्षण शिविर के अवसर परदिनांक 7 जून को प्रात: श्री जिनेन्द्र अभिषेक व नित्यनियम पूजन के पश्चात् मण्डप एवं नंदीश्वर जिनालय से नेमीनाथ दिगम्बर जैन नया मंदिर पहुंचकर श्रीजी के अभिषेक के पश्चात् विधिपूर्वक वेदी पर विराजमान किये गये। इसके पश्चात् शिविर का दीक्षांत एवं समापन समारोह **श्री प्रदीपजी जैन 'आदित्य' (पूर्व केन्द्रीय मंत्री) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री अरविन्दकुमारजी जैन सागर तथा विशिष्ट अतिथि श्री रमेशचंदजी जैन साधनौर थे।**

प्रशिक्षण शिविर की रिपोर्ट पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने दी। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने प्रशिक्षण शिविर के इतिहास व उसकी उपलब्धियों की चर्चा करते हुए पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविर के क्षेत्र में चलायी जा रही विभिन्न योजनाओं, गतिविधियों और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला और उक्त शिविर में सहयोगी बने समस्त विद्वानों, शिविरार्थियों, कार्यकर्ताओं तथा आयोजन समिति का आभार व्यक्त किया।

श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने अपने उद्बोधन में प्रशिक्षण की नयी गतिविधियों की जानकारी दी। इसके अतिरिक्त मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि महोदय ने भी प्रशिक्षण शिविर की प्रशंसा करते हुए अपने विचार व्यक्त किये।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के अध्यक्षीय एवं दीक्षांत भाषण के पश्चात् सभी अध्यापकों को मोमेन्टो प्रदान किये गये।

अन्त में शिविर आयोजन समिति की ओर से सचिनजी मोदी ने काव्यमय प्रस्तुति दी एवं शिविर की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए सभी विद्वानों, अध्यापकों, कार्यकर्ताओं, अतिथियों, दानदातारों एवं साधर्मियों का आभार व्यक्त किया।

बालबोध प्रशिक्षण में 334 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 90 ने विशेष योग्यता, 87 ने प्रथम श्रेणी, 47 ने द्वितीय श्रेणी, 18 ने तृतीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की एवं 1 विद्यार्थी अनुत्तीर्ण रहा। 91 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। बालबोध प्रशिक्षण में प्रथम स्थान स्वर्णिम चौधरी मंगलायतन व प्रांजल जैन उदयपुर ने, द्वितीय स्थान अभिषेक जैन सिद्धायतन व पायल जैन उदयपुर ने एवं तृतीय स्थान अक्षत जैन निम्बाहेड़ा, महिमा जैन खनियांधाना, शिल्पा जैन खनियांधाना व संयम जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया।

प्रवेशिका प्रशिक्षण में 136 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। इनमें से 73 ने विशेष योग्यता, 38 ने प्रथम श्रेणी, 9 ने द्वितीय श्रेणी से परीक्षा उत्तीर्ण की एवं 16 विद्यार्थी अनुपस्थित रहे। प्रवेशिका प्रशिक्षण में प्रथम स्थान मयूरी जैन उदयपुर ने, द्वितीय स्थान भाविका जैन उदयपुर ने और तृतीय स्थान आप्तअनुशीलन जैन दमोह व प्रियंका सिंघई भोपाल ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने एवं संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया।

## धन्यवाद !

**(1)** टोरन्टो (कनाडा) निवासी श्रीमती विद्या–ऋषभ खमेसरा (शिविर परम संरक्षक) द्वारा पुत्र जन्म के उपलक्ष्य में 2001/– रुपये साहित्य की कीमत कम करने हेतु एवं 501/– रुपये स्थायी पूजन फण्ड हेतु संस्था को प्राप्त हुये। **– जय विजय, कोटा**

**(2)** उदयपुर निवासी श्री हरीशचंदजी कोडिया एवं योगिता कोडिया के सुपुत्र **चि. विशाल** का **सौ. अपेक्षा** के साथ दिनांक 3 जून को विवाह संपन्न हुआ एतदर्थ संस्था को 5000/– रुपये ज्ञानदान हेतु प्राप्त हुये।

**(3)** श्री दिलीपभाई शाह मुम्बई के भतीजे **चि. सम्यक शाह** के विवाहोपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय के एक विद्यार्थी के एक वर्ष हेतु 30 हजार रुपये प्राप्त हुये।

## नेट (जे.आर.एफ.) में चयन

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित जिनेश शेठ पुत्र श्री राजेश शेठ मुम्बई का 2017 में आयोजित नेट (जे.आर.एफ.) परीक्षा में चयन हो गया है।

इस उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय परिवार एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक बधाई !

## डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

| | | |
|---|---|---|
| 9 जून से 9 जुलाई | विदेश | तत्त्वप्रचारार्थ |
| 16 से 20 जुलाई | चैतन्यधाम–अहमदाबाद | गुरुवाणीमंथन शिविर |
| 23 जुलाई से 1 अग. | जयपुर | महाविद्यालय शिविर |

आगम के आलोक में –

# समाधिमरण या सल्लेखना

1

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

मानसिक दुःखों को **आधि** कहते हैं, शारीरिक कष्टों को **व्याधि** कहते हैं, बाह्य संयोगों कृत उपद्रवों को **उपाधि** कहते हैं और इन तीनों से रहित आत्मस्वभाव में समा जाने को **समाधि** कहते हैं।

आधि, व्याधि और उपाधि में विषमता है। इनमें सुख-शांति नहीं; आकुलता है, अशान्ति है। भगवान आत्मा के स्वभाव में न आकुलता है, न अशान्ति है। इसलिये **आत्मस्वभाव में समा जाने रूप समाधि में समाहित हो जाना ही धर्म है, आत्मधर्म है।**

**वर्तमान भव को छोड़कर आगामी भव में जाने को मरण कहते हैं। वर्तमान भव के समस्त संयोगों का एक साथ वियोग होने का नाम मरण हैं।**

यद्यपि यह मरण जीर्ण-शीर्ण देह आदि संयोगों के वियोग का नाम है; तथापि इनमें एकत्वबुद्धि के कारण, ममत्वबुद्धि के कारण, अपनेपन के कारण देह आदि सभी संयोगों के वियोग की कल्पना भी अज्ञान अवस्था में इस जीव को आकुल-व्याकुल कर देती है।

वस्तुस्वरूप के जानकार ज्ञानीजन स्वयं को देहादि सभी संयोगों से अत्यन्त भिन्न समझते हैं; इस कारण इनके वियोग में होने वाला दुःख उन्हें नहीं होता। चारित्रमोह के उदय से थोड़ा-बहुत दुःख होता भी है, तो वह अज्ञानी के दुःख से अनन्तवाँ भाग है।

**सदा समता भाव में रहने वाले ज्ञानीजन इन सभी संयोगों के सहज ज्ञाता-दृष्टा रहते हैं, और श्रद्धा की अपेक्षा से सदा समाधि में ही रहते हैं।**

चाहे स्व का परिणमन हो, चाहे पर का; जगत के सम्पूर्ण परिणमन के प्रति समताभाव रहना ही समाधि है। स्व-पर के सम्पूर्ण परिणमन में इष्ट-अनिष्टबुद्धि नहीं होना ही समाधि है। जो हो रहा है, वह हो रहा है; उसमें यह हो और यह न हो; इसप्रकार की काँक्षा एक प्रकार से निदान ही है। निदान एक शल्य है, आर्तध्यान है। उसके रहते समाधि कैसे हो सकती है?

**समाधि के साथ होने वाले मरण को समाधिमरण कहते हैं। इसी समाधिमरण का दूसरा नाम सल्लेखना है।**

मरणान्त समय में होनेवाली इस सल्लेखना के सम्बन्ध में रत्नकरण्डश्रावकाचार के सल्लेखना नामक (छठवें) अधिकार में आचार्य समन्तभद्र लिखते हैं-

**''उपसर्गे दुर्भिक्षे जरसि रुजायां च निःप्रतीकारे।**
**धर्माय तनु विमोचनमाहुः सल्लेखनामार्या।।[१]**

जिनका प्रतिकार संभव न हो; ऐसे उपसर्ग में, दुर्भिक्ष में, बुढ़ापे में और रोग की स्थिति में धर्म की रक्षा के लिये शरीर का त्याग कर देने को आर्यगण सल्लेखना कहते हैं, समाधिमरण कहते हैं।''

तात्पर्य यह है कि ऐसा उपसर्ग आ जाय कि मृत्यु सन्निकट हो, उससे बचने का कोई उचित मार्ग न रह गया हो; ऐसा दुर्भिक्ष (अकाल) आ पड़े कि जब शुद्ध सात्विक विधि से जीवन निर्वाह संभव न रहे; ऐसा बुढ़ापा आ जाय कि अहिंसक विधि से जीवित रहना संभव न रहा हो; ऐसी बीमारी आ जाय कि अहिंसक विधि से जिसका उपचार (इलाज) संभव न रहे; ऐसी स्थिति में अपने धर्म की रक्षा के लिये शास्त्रविहित विधिपूर्वक शरीर का त्याग कर देने को सज्जन पुरुष, ज्ञानीजन, समाधिमरण या सल्लेखना कहते हैं।

**यदि उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा और भयंकर बीमारी का प्रतिकार संभव हो, इलाज संभव हो तो सबसे पहले प्रतिकार करना चाहिये, इलाज करना चाहिये, उपाय करना चाहिये।**

**यदि कोई भी अहिंसक एवं निरापद उपाय शेष न रहा हो तो जिनागम में निरूपित विधि से समाधि ले लेना चाहिये।**

ध्यान रहे जिसप्रकार उक्त परिस्थिति में भी सल्लेखना नहीं लेना उचित नहीं है; उसीप्रकार **प्रतिकार संभव होने पर भी सल्लेखना ले लेना ठीक नहीं है; एकप्रकार से वह उससे भी बड़ा अपराध है; क्योंकि उसमें आत्मघात**

१. रत्नकरण्डश्रावकाचार, श्लोक १२२

**संबंधी दोष लगेगा।**

यहाँ एक **प्रश्न** संभव है कि यह तो एक प्रकार से आत्महत्या ही हुई। आत्महत्या परजीवों की हत्या से भी बड़ा पाप है।

**उत्तर –** सल्लेखना या समाधिमरण आत्महत्या नहीं है; क्योंकि आत्महत्या तो अत्यन्त तीव्रकषाय के आवेग में की जाती है; पर इसमें तो बहुत सोच–समझकर विवेकपूर्वक कषायों को मन्द करते हुये शरीर को कृष किया जाता है। वह भी तब, जबकि जीवित रहने का कोई उपाय शेष न रहे।

**जहाँ तक हमारे व्रतों की मर्यादा के भीतर उपचार संभव है, इलाज संभव है; वहाँ तक सल्लेखना लेने का अधिकार ही नहीं है।**

**मृत्यु की अनिवार्य उपस्थिति में अत्यन्त समताभाव पूर्वक योग्य गुरु के मार्गदर्शन में प्राणों का विधिपूर्वक उत्सर्ग (त्याग) कर देना ही समाधिमरण है, सल्लेखना है।**

देह का त्याग कर देना है अर्थात् देह के सहज होते हुये वियोग को वीतरागभाव से देखते–जानते रहना है। देह का त्याग करने के लिये कुछ करना नहीं है; शान्तभाव से ज्ञाता–दृष्टा बने रहना ही है।

देह का परिवर्तन तो होना ही है। यह एक सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक सत्य है। इस सत्य को स्वीकार कर देह हमें छोड़े – इसके पहले हम उसे छोड़ने को तैयार हो जावें – इसी में समझदारी है। **इस समझदारी का प्रायोगिक रूप ही सल्लेखना है, समाधिमरण है।**

उक्त छन्द में सर्वाधिक महत्वपूर्ण पद **निःप्रतिकारे** है। यह विशेषण इसके पहले आये चारों पदों में लगाना अनिवार्य है।

**तात्पर्य यह है कि जिस उपसर्ग को किसी भी स्थिति में दूर करना संभव न हो, जिस अकाल (दुर्भिक्ष) में अहिंसक विधि से जीवनयापन संभव ही न रहा हो, ऐसा बुढ़ापा कि जिसमें सभी इन्द्रियाँ पूर्णतः शिथिल हो गई हों, जीना एकदम पराधीन हो गया हो, ऐसा प्राण घातक रोग कि जिसका कोई इलाज ही न हो; ऐसी स्थिति में ही सल्लेखना धारण की जा सकती है।**

जिस उपसर्ग, दुर्भिक्ष, बुढ़ापा और रोग में जीवन को कोई खतरा न हो, जीवन यापन असंभव न हो; तो सल्लेखना लेना उचित नहीं है। उक्त स्थितियों का अर्थात् उपसर्गादि का उचित प्रतिकार करना चाहिये।

समताभावपूर्वक मरना नहीं; जीना ही उचित है, क्योंकि मरकर जहाँ भी जावोगे, वहाँ आरंभ में तो असंयमी जीवन ही यापन करना होगा। अतः **संयम की साधक वर्तमान मनुष्य पर्याय को छोड़ना उचित नहीं है।**

उक्त संदर्भ में **पण्डित सदासुखदासजी लिखते हैं –**

''यदि धर्म सेवन की सहकारी इस देह को आहार त्याग करके छोड़ देगा तो क्या देव, नारकी, तिर्यंचों की संयम रहित देह से व्रत–तप–संयम सधेगा?

**रत्नत्रय की साधक तो यह मनुष्य देह ही है।** जो धर्म की साधक मनुष्य देह को आहारादि त्यागकर छोड़ देता है, उसका क्या कार्य सिद्ध होता है? इस देह को त्यागने से हमारा क्या प्रयोजन सधेगा?

व्रत–धर्म रहित और दूसरा नया शरीर धारण कर लेगा।''

पण्डित सदासुखदासजी के उक्त कथन में समुचित परिस्थिति आने के पूर्व आहारादि के त्याग का जोर देकर निषेध किया गया है।

सागार धर्मामृत में पण्डित आशाधरजी लिखते हैं –

**''न धर्मसाधनमिति स्थास्नु नाश्यं वपुर्बुधैः।**
**न च केनापि नो रक्ष्यमिति शोच्यं विनश्वरम्।।५।।**[१]

तत्त्वज्ञानी पुरुषों को धर्म का साधन होने से शरीर को नष्ट नहीं करना चाहिये और यदि वह शरीर स्वयं नष्ट होता हो तो शोक नहीं करना चाहिये; क्योंकि मरते हुये को कोई नहीं बचा सकता।''

आशाधरजी के उक्त कथन में शरीर को नष्ट नहीं करने का स्पष्ट आदेश दिया गया है। साथ ही यह भी कहा है कि यदि शरीर का नाश हो ही रहा हो तो खेद नहीं करना चाहिये।

१. धर्मामृत सागार, पृष्ठ–३११ **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

(पृष्ठ 1 का शेष...)

**दोपहर की व्याख्यानमाला में –** डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, पण्डित शिखरचंदजी सागर, पण्डित राजकुमारजी उदयपुर, ब्र. महेन्द्रजी अमायन, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित जिनेशजी, पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री रहली, पण्डित अजितजी अलवर, ब्र.कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर आदि विद्वानों के विविध विषयों पर व्याख्यान हुए।

**प्रशिक्षण कक्षायें –** बालबोध प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर व डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई ने एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर व पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा ने ली।

प्रवेशिका प्रशिक्षण की सैद्धान्तिक कक्षा पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली और पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा द्वारा एवं शिक्षण पद्धति की मुख्य कक्षा पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर और पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर द्वारा ली गई।

**प्रशिक्षण अभ्यास कक्षाओं** में पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा एवं श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई के निर्देशन में पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित सुनीलजी शास्त्री प्रतापगढ, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित अशोकजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित सौरभजी शास्त्री कोटा, पण्डित अनिलजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित साकेतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनेश सेठ जयपुर, पण्डित गौरवजी शास्त्री जयपुर, पण्डित जिनेन्द्रजी जयपुर, पण्डित विनीतजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अच्युतकांतजी जयपुर, पण्डित संयमजी शास्त्री जयपुर, श्रीमती रंजना बंसल अमलाई, श्रीमती लता जैन देवलाली, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया, श्रीमती मोना भारिल्ल मुम्बई, श्रीमती आशा पाटील जयपुर, कु. प्रज्ञा जैन देवलाली, श्रीमती शुभांगी जैन काटोल, श्रीमती ज्योति जैन कारंजा, कु. प्रतीति पाटील जयपुर, कु. नयना जैन आदि का सहयोग प्राप्त हुआ।

**प्रात:कालीन प्रौढकक्षायें –** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, ब्र. कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, ब्र.हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, ब्र.चंद्रसेनजी शिवपुरी, पण्डित मांगीलालजी कोलारस, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम आदि विद्वानों द्वारा ली गई।

**प्रौढ़ कक्षायें –** प्रात:काल 47 शक्तियों की कक्षा ब्र.सुमतप्रकाशजी द्वारा एवं दोपहर में नयचक्र की कक्षा पण्डित अभयजी शास्त्री देवलाली, समयसार गाथा पर डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर एवं सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति के पूर्व गुणस्थान विवेचन की कक्षा पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा ली गई।

बालवर्ग हेतु प्रतिदिन तीनों समय अनेक कक्षाओं का आयोजन हुआ। इन कक्षाओं का संचालन डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई के निर्देशन में प्रशिक्षणार्थी अध्यापकों द्वारा किया गया, जिसमें सैंकड़ों बच्चे सम्मिलित हुये।

शिविर के दौरान जैन समाज द्वारा म.प्र. बोर्ड परीक्षा में पूरे प्रदेश में हायर सैकण्डरी में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर संयम जैन टीकमगढ को सम्मानित किया गया। साथ ही नंदीश्वर विद्यालय खनियांधाना की छात्रा कु. अभिलाषा कुशवाह को टॉप टेन में आने पर सम्मानित किया गया।

शिविर आयोजन में खनियांधाना जैन समाज के अध्यक्ष श्री राजकुमारजी जैन पड़हार, श्री सुनीलजी जैन 'सरल', श्री ताराचंदजी सिंघई, श्री संतोषजी वैद्य, फैडरेशन के अध्यक्ष श्री दीपकजी जैन व्या, श्री महावीरजी कठरया, श्री सौरभजी वत्सल, श्री सोमिलजी शास्त्री, श्री सुरेन्द्रजी कोठादार, श्री पंकजजी सिंघई, श्री ऋषभजी चौधरी, श्री अरविन्दजी जैन, मीडिया प्रभारी श्री सचिनजी मोदी, श्री आकाशजी शास्त्री आदि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा।

इसप्रकार 51वाँ शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक सानन्द संपन्न हुआ।

**(उद्घाटन समारोह, युवा फैडरेशन अधिवेशन, स्नातक सम्मेलन, संकल्प दिवस समारोह के समाचार पूर्व अंक (जून-प्रथम) में प्रकाशित किये जा चुके हैं।)**

# समयसारमय हो गई मलकापुर की धरा

**मलकापुर (महा.) :** पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित 'समयसारमय हो जग सारा' योजना के अन्तर्गत दिनांक 5 से 9 जून तक दिगम्बर जैन समाज एवं सम्यक तरंग महिला मंडल मलकापुर द्वारा भव्य श्री समयसार मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित प्रयंकजी शास्त्री रहली, पण्डित विजयजी शास्त्री सिमरिया एवं पण्डित सिद्धार्थजी शास्त्री मुंगावली का विशेष सहयोग मिला। कार्यक्रम में लगभग 200 साधर्मियों ने लाभ लिया। **– विनोद निरखे**

**प्रकाशन तिथि : 13 जून 2017**

**प्रति,**

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com